॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे विधाता! वह समय किस काल में आएगा, जब वेद मन्त्रों का पाठ, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के कण्ठ में होगा, जब माता गायत्री का महान् स्वरों में गायन गाया जाएगा। आज हम समय का परिवर्तन चाहते हैं। हे देव! हमारे समक्ष उस समय को प्रकट करो, जहाँ गम्भीर व्यक्ति हों, जहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक वस्तु को विचारने वाला हो। हे विधाता! हमें उस समाज की आवश्यकता नहीं, जहाँ अभिमान हो, तथा अपने से बड़ा किसी को न मान रहा हो। हे विधाता! जब ऐसे ऐसे अभिमानी संसार में उत्पन्न हो जाएँगे तो उनका अभिमान आपके अन्तरिक्ष में रमण करेगा। यह प्रतीत नहीं कि वह अभिमान किस-किस मानव को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। हे विधाता! हमें तो वे व्यक्ति चाहिए, जो निरभिमानी हो, विद्या से परिपक्व हों अर्थात् जिनके पास अनन्त विद्या हो। हे देव! हे मित्र! हे सखा! हम आपकी शरण में आए हैं। हमें उस महत्व को प्रदान करो, जिससे हम महान् बनें, विचित्र बनें, यौगिक बनें।

हे प्रभो! तू कल्याण करने वाला है। तू संसार को उज्ज्वल बनाता है, तेरी महत्ता इस संसार में ओत-प्रोत है। जहाँ हमारे नेत्र जाते हैं, वहाँ तुम्हारा ज्ञान-विज्ञान इतना अनुपम और विलक्षण है, कि जिसे ऋषि तो बहुत कुछ जान भी सकते हैं, परन्तु मानव तो हृदय से उच्चारण करता-करता संसार से चला जाता है। हे परमात्मन्! आपने इस संसार को रचाया है, इसका कल्याण करो, हम तेरी शरण में आए हैं, तेरी महत्ता चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 551 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 626
वर्ष : 46 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. नाभि केन्द्र	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-18
4. राष्ट्र निर्माण	पूज्यपाद-गुरुदेव	19-36
5. ऋषियों के उद्‌गार		37
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 26-8-2018, दिन रविवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

नाभि केन्द्र

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया क्योंकि हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। चाहे वह जड़वत् के रूप में हो चाहे चैतन्यवत् के रूप में हो क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा का वर्णन कर रहा है अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है, उसकी महिमा का गान गा रहा है। क्योंकि महिमा का गान गाना ही उसके ज्ञान और विज्ञान को उद्बुद्ध करना है अथवा उसके विज्ञान की धाराओं में रत्त रहना है। जिस प्रकार हमारे यहाँ प्रत्येक वेद मन्त्रों में नाना प्रकार के रूपों का वर्णन होता रहता है—कहीं उस परमपिता परमात्मा को विष्णु के रूप में, क्योंकि पालन करने वाला ही वह विष्णु है, इसीलिए वह विष्णु के रूप में ही रत्त रहने वाला है।

ब्रह्माण्ड

परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्रः कुछ कह रहा है, नाना प्रकार की अग्नियों का चयन भी होता रहता है। नाना प्रकार के

लोक-लोकान्तर एक-दूसरे में पिरोये हुए रहते हैं। जैसे मानो शब्द है एक शब्द, शब्द में पिरोया हुआ है परन्तु जैसे माला है माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके हैं और वह सूत्र में पिराने से ही माला बन जाती है। इसी प्रकार ये जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है चाहे वह जड़वत् के रूप में हो, चाहे वह चेतना के रूप में हो परन्तु ये ब्रह्माण्ड माला के सदृश–जैसे माला के मनको का कोई सूत्र बना हुआ है इसी प्रकार ये जो ब्रह्माण्ड हमें नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों वाला दृष्टिपात आ रहा है। मानो इसका कोई स्रोत है। एक-एक शब्द में बेटा! इस संसार का विज्ञान पिरोया हुआ है। एक शब्द उच्चारण हो रहा है दूसरे शब्दों की धारा का जन्म हो रहा है परन्तु ये ब्रह्माण्ड अपने में ध्वनित हो रहा है। एक ध्वनि का जन्म हुआ है और द्वितीय ध्वनि बेटा! उसके पश्चात् विद्यमान है। तो कैसा मानो ये अनुपम एक रूप हमें दृष्टिपात आता है।

साधना

जब बेटा! साधकजन योगाभ्यास में परणित होते हैं अथवा समाधि लगा-लगा करके अपनी चित्त की वृत्तियों का निरोध करते हैं तो मानो जब चित्त की वृत्तियों का निरोध करते हैं उसे प्राण सूत्र में पिरो देते हैं। कोई भी ऐसा साधक अब तक सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक नहीं हुआ है जो प्राण के निरोध किए बिना मानो देखो! चित्त की मनों की प्रवृत्तियों को जब तक प्राण सूत्र में नहीं पिरो देता है तब तक मुनिवरो! देखो उसकी साधना पूर्णरूपेण नहीं हो पाती। क्योंकि वह अपने में महान् और विचित्रता में अपने को ले जाता है। तो विचार विनिमय क्या? मानो देखो! साधक उस प्राण सूत्र में अपनी प्रवृत्तियों को पिरो देता है। तो वह एक मानो देखो! जैसे सूत्र में मनके पिरोये जाते हैं इसी प्रकार ये नाना प्रकार की जो प्रवृत्तियाँ हैं ये उस प्राण सूत्र में पिरोयी जाती हैं और पिराने से ही मुनिवरो! देखो उसकी साधना

का मानो रूपेणता को प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में कोई विवेचना देने नहीं आया हूँ, केवल साधना के सम्बन्ध में अपने को ले जाना नहीं चाहता हूँ, आज हमारा वाक् कुछ कह रहा है।

आज हमारा कुछ मन्त्रः हमें किसी मार्ग के लिए प्रेरित कर रहा है। हमारे यहाँ बेटा! ऋषि मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके एक-एक वाक् के ऊपर अनुसन्धान होता रहा है। कहीं वेद का शब्द उन्हें प्राप्त हो गया है उसी वेद मन्त्रः में बेटा! वर्षों व्यतीत हो जाते। उसी मानो उसी आख्यायिका को साकार रूप देने में, तो मानव को अपने जीवन को साकार रूप देने में सदैव तत्पर रहना चाहिए। परन्तु जैसा हमारे यहाँ प्रायः आचार्यों ने अपनी विवेचना में ''अप्रितीरुपाम् ब्रह्मे'' मेरे प्यारे! मुझे वो काल भी स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! एक शब्द को ले करके वह अपने में अनुसन्धान करते रहते थे।

श्रुति ऋषि महाराज का चिन्तन

आओ बेटा! आज मैं तुम्हें मानो ऐसी स्थली पर ले जाना चाहता हूँ जिन वाक्यों की पुनरुक्तियाँ मैने पूर्व काल में भी प्रगट की, आज भी उन वाक्यों की पुनरुक्तियाँ अवश्य करने वाला हूँ। मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में भी निर्णय दिया परन्तु आज भी मैं उन वाक्यों को निर्णयात्मक देना चाहता हूँ, जिससे हमारे जीवन में एक महानता की ज्योति अनुपमता के रूप में परणित होती चली जाए। तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में, उस हिमालय की कन्दराओं में ले जाना चाहता हूँ जहाँ हिमालय की कन्दराओं में बेटा! ऋषि मुनि अपने में अनुसन्धान करते रहते। बेटा! एक समय महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज, मेरे प्यारे! देखो महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज एक समय श्रुति ऋषि महाराज के द्वार पर पहुँचे तो श्रुति ऋषि महाराज ने कहा कि भगवन् आज हम वेदों का अध्ययन कर रहे थे प्रातःकालीन

परन्तु उसमें वेद में कुछ शब्द ऐसे विचित्र आए हैं कि उनके ऊपर हमें विचार विनिमय करना बहुत अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि कौन से शब्द हैं? उन्होंने कहा कि ये शब्द ये कहता है ''सम्भवा ब्रहे'' मानो देखो! अस्सुतम जैसे एक मानव अपनी स्थलियों पर विद्यमान है और उस पर कोई आक्रमण कर रहा है परन्तु आक्रमण जब कर रहा है तो वह कहता है अपने वेदनामयी मानो देखो! मेरी मृत्यु आने वाली है। मानो एक मानव जो दूसरा विद्यमान है वह कह रहा है मैं मानो तुम्हारी रक्षार्थ के लिए मैं तत्पर हूँ। तो मानो देखो! इस प्रकार उसे एक मानो देखो बल की प्राप्ति हो जाती है और वह जो बल उसे प्राप्त हुआ है उसी बल को ले करके मानो देखो! वह अपने में महान् बलिष्ठ बन जाता है और वह उनका मानो देखो! उनके ब्राहा मानो देखो! उनके लिए उसे बल प्राप्त हो करके उनसे संग्राम करना प्रारम्भ कर देता है। तो प्रभु! मानो देखो ऋषि ने कहा उसको हम साकार रूप देना चाहते हैं, उसका साकार रूप हमें कैसे प्राप्त हो क्योंकि वैज्ञानिकजनों ने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया है। हमने ये श्रवण किया है महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण हुआ और ब्रह्मचारी सुकेता, व्रेतकेतु के यहाँ भी इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण हुआ है परन्तु हम इसके सम्बन्ध में एक यन्त्र का निर्माण करना चाहते हैं जिससे मानव की संग्राम में मृत्यु न हो, संग्राम में मृत्यु नहीं होनी चाहिए ये तो मानव का मौखिक गुण है कि संग्राम करना अपने मानो बल का आदान प्रदान करना ही मानव का मौखिक एक गुण माना गया है परन्तु जो इस प्रकार की वार्त्ता उन्होंने प्रगट की तो मेरे प्यारे! उन्होंने विचार विनिमय प्रारम्भ किया।

महाराजा शिव द्वारा अनुसन्धान

वेद के मन्त्रों के ऊपर अथवा शब्द के ऊपर विचारने लगे कि ये तो बड़ा अनुपम शब्द परन्तु देखो भ्रमण करते हुए मेरे प्यारे! देखो

हिमालय की कन्दराओं में पहुँचे। हिमालय के समीप जा करके वे महाराजा शिव के द्वार पर पहुँचे, जहाँ मेरे प्यारे! देखो महाराजा शिव अपने में मानो अनुसन्धान करते रहते थे। मानो देखो! नाना ऋषिवर उनके समीप आते रहते वह भी स्वतः विज्ञान के एक-एक अँकुरों को जानने का प्रयास करते रहते, उसको क्रियात्मक लाना मानो देखो उसमें प्रायः उनका कर्तव्य बन गया था। जब इस प्रकार उन्होंने वर्णन किया ''प्रहे'' मानो विभाण्डक मुनि महाराज ने महाराजा शिव के चरणों में ओतप्रोत हो करके बेटा! ये वार्त्ता उन्होंने प्रगट की क्या प्रभु! हम जानना चाहते हैं क्या एक मानव स्थली पर उन्होंने ज्योंकि त्योंकि अपनी गाथा उन्होंने वर्णन की। वर्णन करते उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो मेरे प्यारे! देखो वहाँ उस अनुसन्धान में लग गए। क्रियात्मक अपने जीवन को लाने के लिए देखो उसका साकार रूप बनाना कि उस शब्द को हम कैसे साकार रूप बनाएँ मानो कौन-कौन सी धातु को हम मानो क्रिया रूप दें। तो मानो उस आभा में वह परणित हो गए। तो मुनिवरो! देखो ऐसा कुछ प्रतीत होता है कि उन्होंने मानो एक वर्ष हो गया था इसी के ऊपर अनुसन्धान करते-करते उन्होंने बेटा! कुछ नाना प्रकार की धातुओं का निर्माण किया और उन धातुओं का निर्माण करने के पश्चात् उन्होंने बेटा! एक यन्त्र का निर्माण किया और यन्त्र में ये विशेषता उन्होंने परणित की क्या मानो देखो एक स्थली पर वह विद्यमान है और एक मानव संग्राम कर रहा है परन्तु देखो वह यन्त्र उसको सहायता दे रहा है, वह उसको सहायतार्थ बना रहा है। परन्तु द्वितीय रूप उन्होंने कुछ ऐसा प्रगट किया जो ऋषि प्रणाली आध्यात्मिकवाद में लाना चाहते थे।

मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा कि प्रभु! एक रूप तो ये मानव का साकार बन गया है परन्तु एक हम ये जानना चाहते हैं, कहते हैं कि मानव का जो नाभि केन्द्र है इस नाभि केन्द्र में मानो देखो अमृत की धाराएँ अमृत्व उसमें गमन करता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो उन

ऋषियों ने जब ये वाक् कहा तो महाराजा शिव इत्यादियों ने बेटा! इसके ऊपर अनुसन्धान करना प्रारम्भ किया और प्रारम्भ जब किया तो मानो देखो वह उसमें बेटा! समाधि पिपाद में रमण करने लगे। बेटा! कहीं लघु मस्तिष्क में परणित हो गए तो मानो देखो नाभि में जो अमृतमयी धाराओं का जन्म होता था उसको जानने के लिए मेरे प्यारे! उन्होंने प्रायः बहुत-सा अनसुन्धान किया। अनुसन्धान करते-करते बेटा! उन्होंने प्राण की सर्वत्र धाराओं को एकत्रित किया। मानो ये विचारा क्या प्राण को हम मानो अपान में परिणत करना चाहते हैं और अपान को मुनिवरो! देखो वह व्यान में परणित करना चाहते हैं और व्यान को समान में और समान को मुनिवरो! देखो उदान में परणित करते हुए मानो एक-दूसरे प्राण की प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित करते हुए मुनिवरो! देखो नाग देवदत्त इत्यादियों में वे एक-दूसरे में प्राण का संग्रह करने लगे। जब संग्रह करने लगे तो विचारा गया क्या ये प्राण ही संसार का बेटा! मूलक माना गया है। **जितना भी सृष्टि विज्ञान है मानो ये प्राण के आधार पर निहित रहता है। मानव का जितना भी मानवीयत्व है वह चाहे तरङ्गों के रूप में हो, चाहे वह मानो देखो मौन के रूप में हो, चाहे बुद्धि की भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराओं का जन्म क्यों न हो परन्तु वह सर्वत्र गर्भ में बेटा! एक प्राण ही माना गया है।** इस प्राण के ऊपर हमारे ऋषि मुनि बेटा! अपना सङ्कल्प करते रहते हैं। और उस सङ्कल्पोमयी सृष्टि का मानो देखो विधान किया गया है। तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें ऐसे गम्भीर रहस्यों में तो ले जाना नहीं चाहता हूँ केवल साधारणत्व अपने वाक्यों को प्रगट कर रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो वो जो नाभि केन्द्र है इस नाभि के द्वारा अमृत की धाराओं का मानो एक प्रकार का वो प्राणायम है और प्राण की धाराएँ हैं क्योंकि प्राण के ऊपर अनुसन्धानवेत्ताओं ने बेटा! कहीं प्राण को एक मानो देखो मस्तिष्क में लाने का प्रयास किया। इसी प्राण के द्वारा मानव ने दीपावली गान के रूप में मानो देखो अपने प्राण को

शीतली प्राणायम और देखो खेचरी मुद्रा में परणित करके मानो देखो उसको एक अभ्योदय करते रहे हैं। जिसे बेटा! मैंने तुम्हें बहुत पुरातनकाल में निर्णय दिया था क्या दीपावली परणित हो जाती है। परन्तु देखो इसी प्रकार प्राणों के रूपों में रत्त रहने वाला मेरे प्यारे! देखो वृष्टि का याग प्रारम्भ करने लगता है। मानो देखो मेघों से वायु मण्डल में जो परमाणु मानो जल के गमन करते हैं वह एकत्रित हो जाते हैं प्राण सूत्र के द्वारा। इस प्राण के द्वारा तो बेटा! वृष्टि का रूप बन जाता है। तो परिणाम क्या मानो देखो ऋषि-मुनियों ने दोनों प्रकार के रूपों को साकार बनाने का प्रयास किया है। वह साकार रूप जब मुनिवरो! देखो धारण कर लेते हैं, साकार रूप बन जाता है तो मानव के जीवन में एक अनुपमता छा जाती है। तो आओ मेरे प्यारे! विचार क्या मानो देखो उसी ब्रह्मवाचो देवम् ब्रह्माः लोकाम् हिरणयम् प्रथाः वेद के आचार्यों ने बेटा! अपना वर्णन करते हुए कहा। आचार्यों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की धाराओं में रत्त रह करके बेटा! उन्होंने अपना अनुसन्धान करते हुए उन धाराओं को लाने का प्रयास किया जिन धाराओं में बेटा! मानव का जीवन अपने में प्रायः गति करता रहा है, अपने में गतिशील होता रहा है। उन्हीं गतियों को जान करके मानव अपने में अन्वेषण करता हुआ विचारशील बनता रहा है।

परन्तु देखो आज मैं तुम्हें कहाँ ले जा रहा हूँ। बेटा! देखो ये विचार मानो पुरातन काल में भी मैंने देखो अपना दिया, आज भी मैं दे रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो ये ही यन्त्र, उन्होंने दो यन्त्र इस प्रकार के निर्माण किए कि एक मानव संग्राम कर रहा है और उसे सहायता दे रहा है वो यन्त्र मानो अपनी तरङ्गें दे रहा है। मेरे प्यारे! देखो वही महाराजा शिव ने इन यन्त्रों को एक समय बेटा! देखो राजा रावण और देखो उनके और बहुत से सहयोगी बेटा! देखो महाराज शिव के द्वार पर आए और महाराजा शिव से उनकी बहु वार्त्ता प्रगट हुई और वार्त्ता प्रगट हो करके उन्होंने उसके ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसन्धान किया।

महाराजा शिव द्वारा यन्त्र का अनुदान

अनुसन्धान करने के पश्चात् मेरे प्यारे! राजा रावण ने वो यन्त्रः महाराजा शिव से मुनिवरो! देखो अनुदान में स्वीकार कर लिया। मेरे प्यारे महाराजा शिव ने वो यन्त्र उन्हें प्रदान कर दिया और प्रदान करके, मुनिवरो! देखो महारानी मन्दोदरी उनके समीप मानो उनके सङ्ग थी, वह दोनों को यन्त्र प्रदान कर दिया। मेरे प्यारे! देखो उनका जो लङ्का में उनका गृह था वास करने का उनके मध्यम के दोनों खम्भों में उन यन्त्रों को बेटा! स्थापित किया गया। वे यन्त्र स्थापित हो गए।

भगवान् राम का विजय के लिए चिन्तन

मुनिवरो! देखो कुछ समय के पश्चात् काल व्यतीत होता रहा परन्तु देखो राजा राम और देखो भगवान् राम और रावण दोनों का संग्राम आ गया। जब संग्राम होने लगा मेरे प्यारे! देखो अन्तिम चरण जब रावण देखो लङ्का का विनाश हो गया अन्तिम चरण केवल देखो राजा रावण का रह गया मृत्यु को, तो बेटा! वो मृत्यु को प्राप्त नहीं हो रहे थे। मानो संग्राम हो रहा है और उसे बल वो यन्त्र दे रहे हैं परन्तु राम से वो समाप्त नहीं हो रहा है। जब समाप्त नहीं हो रहा है तो मेरे पुत्रो! देखो ऐसा कुछ मुझे स्मरण है, ऐसा वाक् मुझे प्राप्त हुआ है क्या मानो देखो जब ये वाकम् ब्रह्मे जब मृत्यु नहीं हो रही कई दिवस हो गए संग्राम होते-होते। तो बेटा! जब मानो देखो वृत्तियों में राम ने एक मध्य रात्रि में बेटा! एक सभा की और राम ने कहा कि रावण की मृत्यु नहीं हो रही है, मैं लङ्का में असफल हो रहा हूँ परन्तु उसके मूल में क्या है? मेरे प्यारे! देखो उस सभा में महाराजा जामवन्त, महाराजा सम्पाति, मेरे प्यारे! देखो विभीषण और मुनिवरो! देखो अङ्गद, नल इत्यादि जितने भी हनुमान आदि देखो लक्ष्मण सब विद्यमान थे। जब विद्यमान थे तो उन्होंने महाराजा जामवन्त को कहा कि महाराज इसके मूल में क्या है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! हम नहीं जानते। मेरे प्यारे! हनुमान जी से

कहा क्या तुम उच्चारण करो कि इसके मूल में क्या है? रावण की मृत्यु क्यों नहीं हो रही है? उन्होंने कहा प्रभु हम नहीं जानते परन्तु देखो जब इस पर ये विचार होता रहा तो मुनिवरो! देखो महाराजा जामवन्त ने महाराजा विभीषण से कहा क्या महाराज इसके मूल में क्या है? क्योंकि तुम लङ्का को विशेष जानते हो तुम उच्चारण करो। उन्होंने कहा कि इसको महाराजा शिव से प्रार्थना की जाए यदि वे कोई कारण नियुक्त कर दें तो हो सकता है। मेरे प्यारे! देखो भगवान् राम ने महाराजा हनुमान और महाराजा जामवन्त दोनों को ये कहा कि जाओ भगवान् शिव के द्वार पर जाओ उनकी पूजा करो और उनसे ये मानो वाक् ले करके आओ इसके मूल में क्या है?

महाराजा जामवन्त और हनुमान जी का महाराजा शिव के द्वार गमन

मेरे प्यारे! देखो महाराजा जामवन्त और हनुमान ने अपने वाहन को ले करके दोनों ने ब्राह्मण के स्वरूप को भिक्षुक का स्वरूप बना करके उन्होंने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो हिमालय में पहुँचे जहाँ भगवान् शिव और माता पार्वती दोनों अपने में अनुसन्धान करते रहते थे अथवा विचार विनिमय करते रहते थे। भिन्न-भिन्न प्रकार का उनका विचार विनिमय होता रहता था। मानो देखो आत्मिक चर्चाएँ, विज्ञान की चर्चाएँ और देखो उनका लोक-लोकान्तरों के ऊपर उनका विशेष मानो बल रहता था। दोनों अपने में अनुसन्धान करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! देखो जब दोनों भिक्षुक उनके द्वार पर पहुँचे तो मुनिवरो! देखो दोनों ने उनके महाराजा शिव के चरणों की वन्दना की। उन्होंने उनका अतिथि किया। अतिथि सत्कार करने के पश्चात् उन्होंने कहा कहो हे ब्रह्मा ब्रह्मे! तुम किस मानो तुम्हारे आने के मूल में क्या है? मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने कहा भगवन् हम ये जानना चाहते हैं क्या भगवन् देखो राजा रावण का जितना भी वंशलज है मानो वो महाराजा देखो उनके पिता जो महापिता थे **पुलसत्य** ऋषि महाराज और भी नाना जो उनका वंशलज

है वह आप का भगवन् बड़ा मानो प्रिय और आपकी आज्ञा का पालन करते रहे हैं। परन्तु हम यह जानना चाहते हैं कि इसके मूल क्या है कि आप उनकी सहायता के लिए नहीं पहुँचे? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, भगवान् शिव बोले कि हे ब्रह्म भिक्षुकों तुम चाहते क्या हों? उन्होंने कहा प्रभु राम और रावण का संग्राम हो रहा है लङ्का मानो नष्ट हो गयी है। और आप मानो देखो आप उनकी सहायता के लिए नहीं जा रहे हैं। भगवान् शिव बोले क्या हे भिक्षुकों! मैं इसलिए नहीं जा रहा हूँ राष्ट्रीय परम्परा ये कहती है राष्ट्र का जिस भी काल में निर्माण हुआ है वह मानो देखो इन वाक्यों को ले करके हुआ है कि महापुरुषों की रक्षा की जाए और वेद मानो विद्या की रक्षा की जाए और आतताइयों का विनाश होना चाहिए। आततायी कौन होते हैं? जो मानो देखो प्रिय द्वितीय प्राणियों का अनहित चाहते हैं मानो देखो वह जो अनहित चाहते हैं वह नहीं होना चाहिए परन्तु जो किसी की मानो पुत्री का या मानो देखो किसी देवी का हनन करता है वह अपनी राष्ट्रीय प्रणाली को समाप्त कर रहा है क्योंकि राष्ट्रीय प्रणाली मानो ये नहीं कहती है। राष्ट्रीय प्रणाली ये कहती है क्या देखो राजा के राष्ट्र में चरित्र की रक्षा होनी चाहिए, राजा स्वयँ चरित्रवान होना चाहिए और चरित्र की रक्षा होनी चाहिए। मानो देखो राष्ट्र कन्याएँ अपने में चरित्रवान रह करके पुरुष मानो उनकी रक्षा करने के लिए तत्पर हों। राजा की इस प्रकार की नियमावली होनी चाहिए और वेद की रक्षा होनी चाहिए। क्योंकि वेदों का जो गान है वह गाया जाना चाहिए क्योंकि उससे शुद्धि-वायुमण्डल का शुद्धिकरण होता है, राष्ट्रीयता का शुद्धिकरण होता है। इसीलिए देखो राजा रावण ने सबसे प्रथम ये मानो देखो अनावृत्ति किया है क्या वो बनों में से जा करके मानो देखो राजलक्ष्मी महारानी सीता को अपने गृह में छल करके लाए। युद्ध करके लाते तो ये राष्ट्रीय कुछ, मानो देखो राष्ट्रीयता तो इसमें भी नहीं है। जिस काल में मानो देखो देवियों के ऊपर देखो राष्ट्र एक-दूसरे को नष्ट करने के लिए तत्पर हो जाता है एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को मानो देखो

अप्रतियों में हीनता में पहुँचाना प्रारम्भ कर देता है मानो देखो वह राष्ट्र समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार मैं इसीलिए नहीं पहुँचा हूँ, मैं इसलिए नहीं गया मैंने कोई सहायता नहीं दी क्योंकि राजा रावण आतताइयों के रूप में परणित हो गया है। मेरी दृष्टि में वह महान् नहीं रहा है, उनके राष्ट्र में चरित्र का अभाव हो गया है। मानो देखो महाराजा शिव ने जब इस प्रकार ये वाक् प्रगट किए तो उन्हें वार्त्ता-वार्त्ता में ये जान गए कि ये भिक्षुक नहीं हैं। उन्होंने कहा मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है क्या तुम भिक्षुक नहीं हो उन्होंने कहा प्रभु वास्तव में हम भिक्षुक नहीं हैं परन्तु हम केवल, ये, हनुमान बोले कि महाराजा जामवन्त हैं मैं हनुमान हूँ। परन्तु देखो हम यह वाक् जानना चाहते हैं या हमें ये जानकारी प्राप्त हो गयी क्या आततताइयों को तुम नष्ट करने के लिए तत्पर हो तो प्रभु उस आततायी की जो मृत्यु नहीं हो रही है उसके मूल में क्या है? महाराजा शिव मौन हो गए। उन्होंने कहा अहो तुम यह जानकारी के लिए आए हो। जब उन्होंने ये प्रगट किया तो बेटा! उन्होंने कहा कि जाओ इसके मूल में इस वाक् को महारानी मन्दोदरी ही प्रगट करा सकती है, उसे ये प्रतीत है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! ये कैसे हो सकता है? उन्होंने कहा नहीं वो महान् सुशीलता की प्रतीक मानी गयी है।

मेरे प्यारे! देखो उस समय दोनों ने उस वाक् को ले करके वहाँ से गमन किया। सब वार्त्ता उन्होंने प्रगट कर ली कि दो यन्त्र हैं और वो यन्त्र मानो देखो उनके गृह में परणित हैं। दोनों, देखो गृह जो विश्राम गृह है जो मध्य के दोनों स्तम्भ हैं उनमें मानो यन्त्र विद्यमान हैं वो सहायता देते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! दोनों ने वहाँ से गमन किया।

महारानी मन्दोदरी से भिक्षा

भ्रमण करते हुए, मेरे प्यारे! अपने वाहन में गति करते हुए वे मुनिवरो! देखो राम की सेना में आ गए। राम की सेना में आए तो उन्होंने आते ही एक सभा की और भगवान् राम से ये कहा प्रभु! ऐसा

उन्होंने वर्णन किया और उसको मानो महारानी मन्दोदरी ही प्रदान कर सकती है। मेरे प्यारे! दोनों ने अपने उसी भिक्षुक रूप को धारण किया और अपना भिक्षुक स्वरूप बना करके मेरे पुत्रो! देखो वे जा करके महारानी मन्दोदरी से उन्होंने कहा भिक्षामयी देही। जब भिक्षामयी देही कहा उन्होंने कहा ''ब्रह्मवाचो व्रहे'' मेरे प्यारे! देखो उन्होंने साधु जान करके, भिक्षुक जान करके उन्होंने नाना मोतियों के मानो देखो अपनी स्थली अञ्जलि में ले करके उनके समीप आ पहुँची। उन्होंने कहा हे मातेश्वरी ये नहीं चाहिए। उन्होंने कहा क्या चाहिए? क्या उन्होंने कहा हम तीन वचन चाहते हैं। उन्होंने तीन समय उन्होंने वाक्यों से देखो वचनों की वृत्तियाँ प्राप्त कीं, उन्होंने कहा तो हे मातेश्वरी हम चाहते हैं आप अपने सुहाग का हमें दान प्रदान कर दीजिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा अरे! तुम कौन हो? उन्होंने कहा कि हम मानो एक जामवन्त और एक हनुमान हैं। उन्होंने अपने में प्रगट किया। महारानी मन्दोदरी मौन हो गई परन्तु देखो वाणी द्वितीय रूपों में नहीं आई। उन्होंने कहा मेरी वाणी वायुमण्डल में प्रसारित हो गयी है, मेरी वाणी का उतना महत्व देखो बलित हो गया है इसलिए मैं अपनी वाणी को अपने में मानो देखो हरित नहीं चाहती। जब उन्होंने ये वाक् कहा तो बेटा! वे बोले तो मातेश्वरी हम यह चाहते हैं। तो ऐसा बेटा! मुझे स्मरण है उन्होंने कहा ''ब्रह्मवाहो ब्रहे वृताम् देवाम् दधि ब्रवहे कृतम् देवो विष्ठम् ब्रवहे वाचाः''। मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने ये वाक् प्रगट किया उन्होंने कहा ये बीच के दोनों स्तम्भों में से बेटा! यन्त्रों को उन्होंने प्रदान कर दिया। मेरे प्यारे! देखो यन्त्रों को समुद्र में परणित कर दिया और समुद्रों में परणित करके बेटा! अगला जो दिवस आया संग्राम का, तो बेटा! देखो राजा रावण की मृत्यु हो गयी।

ऋषि-मुनियों का क्रियात्मक जीवन

मेरे प्यारे! देखो विचार क्या मैं ये विचार दे रहा था कि विज्ञान अपने में अनूठा बन करके रहा है। इस विज्ञान में, मानो देखो जहाँ विज्ञान

अनूठा रहा है वहाँ विज्ञान का समापन भी इसी प्रकार हो जाता है। तो विचार विनिमय क्या बेटा! मैं ये उच्चारण कर रहा था क्या ये जो प्राण है इस प्राण सखा को जानना चाहिए। बेटा! ये प्राण मानो देखो प्राण ही मानो इस विभाजन के मूल में संसार में देखो प्राणों का विभाजन होता रहता है। बेटा! देखो दस प्रकार का स्वरूप बना है इन मानो देखो प्राण के विभाजन का परिणाम क्या है बेटा! विचार विनिमय देने का मुनिवरो! देखो विज्ञान अपने में अनूठा रहा है। ऋषि-मुनियों ने क्रियात्मकता में लाने का भिन्न-भिन्न रूपों में बेटा! उन्होंने प्रयास किया है और वह प्रयास इतना विशाल रहा है क्या ऋषि-मुनियों के मस्तिष्क बेटा! देखो उसमें रत्त रह करके एक-एक वाक् को मेरे प्यारे! उन्होंने साकार रूप दे करके परमाणु का विभाजन किया। परमाणु के मानो देखो परमाणु का विभाजन करके उनको सुगठित किया और उसी में ला करके बेटा! एक-एक शब्द में जो परमाणु हैं उसी परमाणु को मुनिवरो! देखो उन्होंने उच्चारण किया और उसको साकार रूप बनाया, साकार रूप बना करके मेरे प्यारे वह विचित्रता को प्रदान हो गया।

आओ मुनिवरो! देखो मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ, विचार ये देने का हमारा अभिप्राय क्या है? हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए विचार ये दे रहे हैं कि परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है। ये विज्ञानमयी स्वरूप जो परमपिता परमात्मा है जो एक-एक वेद का मन्त्रः मेरे प्यारे! देखो उस प्रभु की गाथा गा रहा है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का वर्णन कर रहा है, उसकी महती का वर्णन कर रहा है जिसकी महती का वर्णन करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो द्वितीय कुछ नहीं रह पाता। आओ मेरे प्यारे! मानो एक-एक वाक् के भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप माने गए है, उनका स्वरूप भिन्न बन जाता है। मानो देखो माला में पिरो करके भिन्न बन जाता है। मुनिवरो! देखो इसी प्रकार जब हम इस प्रकार के विचारों को व्यक्त मानो क्रियात्मक लाने में सदैव तत्पर होते हैं तो बेटा! विज्ञान हमारे समीप आ करके प्रायः

नृत्य करने लगता है। तो आज के हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या है? मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक वेद मन्त्रः उस प्रभु के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन कर रहा है जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो मानो देखो ये ज्ञान और विज्ञानमयी जो स्वरूप मेरा प्रभु है वह आनन्दमयी का स्रोत कहलाता है। आओ मेरे प्यारे! हम अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते हुए, अपने देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या हम बेटा! साहित्य में चले गए। हम मानो त्रेता के उस काल में चले गए जहाँ बेटा! देखो ऋषि-मुनि अपने में अनुसन्धान अथवा एक दूसरे की आभा में रत्त रह करके बेटा! अपना गान गाते रहते। ये है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उसकी महिमा को जानते हुए अपने को क्रिया रूप में बनाते बेटा! इस सागर से पार होना चाहिए। ये है मुनिवरो! आज का वाक्। अब वेदों का पठन-पाठन होगा इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त।

ओ३म् मानस् ब्रथाहाः आभ्याम् मत्थ प्राः
वाचनेनम् रथम् गाताहम् मनु वाचन्माहाः।
ओ३म् दधि ब्रह्म गातद्ध रेवम् मनु ब्रणु प्रजाम् आपो रथाहा गाताम् मनो सर्वाः।।
ओ३म् ययशथाम् ब्रथाहा मां दधि ब्रह्मा।।

दिनाँक : 28 जून, 1985
समय : सायँ 7 बजे
स्थान : चान्दना नंगली।

।। ओ३म् ।।

राष्ट्र निर्माण

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं। जितना भी यह जड़ अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस ब्रह्माण्ड के मूल में वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है और ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर मनन और चिन्तन किया है। वह परमपिता परमात्मा जो सर्वत्र है कोई स्थली ऐसी नही है, समुद्रों की कोई तरङ्गें ऐसी नहीं हैं, पर्वतों की ऐसी कोई गुफा नहीं है जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हो। एक-एक कण-कण में दृष्टिपात आ रहा है, एक-एक अणु और परमाणु में वह तो गतिशील होने वाला परमाणु है, वह जो उसके मिलान में, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में निहित रहने वाला है।

वेद और दर्शन

मुझे बहुत से वाक् स्मरण आते रहते हैं, वेद के जब विचार-विनिमय में विचार बिन्दु में प्रवेश होते हैं तो प्रभु का यशोगान हमारे समीप आता रहता है। क्योंकि जब तक मानव परमपिता परमात्मा को एक-एक कण में अथवा ब्रह्माण्ड के मूल में दृष्टिपात नहीं करेगा तब तक वह मानव साधक नहीं बन सकता। क्योंकि **साधक और योगेश्वर उस काल में बनता है जहाँ वह अपनेपन को समाप्त कर देता है।** जैसे अणु और परमाणु की विवेचना हमारे प्रायः वैदिक-साहित्य

में आती रही है, अणु का विभाजन करने से, परमाणु का विभाजन करने से ब्रह्माण्ड की चित्रावलियाँ, उसके समीप आ जाती हैं। परन्तु आज मैं मुनिवरो! इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना नहीं देने आया हूँ। आज का हमारा वेद का मन्त्र कुछ कह रहा है, प्रेरणा दे रहा है, प्रेरित हो रहा है। आज हमारा यज्ञम् ब्रह्म व्रत व्राहा। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे नाना प्रकार की प्रेरणा देते रहते हैं परन्तु यज्ञम् भविता लोकाः, मेरे प्यारे यह जो यज्ञ कर्म है यह परम्परागतों का एक मानवीय क्रियाकलाप है। सृष्टि के प्रारम्भ में आदि ऋषियों ने वेद के मन्त्रों को ले करके उसके ऊपर अनुसन्धान किया और वैज्ञानिक रूपों को ले करके मानव ने उसके ऊपर नाना प्रकार की चित्रावलियों का निर्माण भी किया है। इसलिए जो भी क्रियाकलाप सृष्टि के प्रारम्भ से हमारे मस्तिष्कों में और क्रियाकलापों में परणित रहा है क्रियाकलाप पुनः मानव के जीवन की वृद्धियों की महानता लाने के लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने नाना प्रकार के यागों का वर्णन किया है क्योंकि उसमें ज्ञान है, विज्ञान है एक सार्थकता रहती है।

याग की महिमा

महर्षि भारद्वाज गोत्र में तो यागों को अपनी विज्ञान की धारा को जाना है, उद्दालक गोत्रीय ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर बड़ा गम्भीर अध्ययन किया है। उस अध्ययन के नाते ही आज मुनिवरो! देखो कुछ वेद मन्त्र भी स्मरण आए हैं। वेद मन्त्र कहते हैं चित्रम् वृथम् यज्यो वृती देवाः। यह जो नाना प्रकार के चित्र हमारे समीप आते रहते हैं और वह वायुमण्डल में मिश्रित होते हैं, वायुमण्डल में वह गति करते रहते हैं तो वह जो विज्ञानाम् वृते याग में जो मानव की भावनाएँ और तरङ्गें वायुमण्डल में प्रवेश कर जाती हैं। मैंने इस सम्बन्ध में पुरातन काल में भी तुम्हे निर्णय दिया था। एक समय व्रतकेतु राजा के मन में यह वाक् आया कि मेरा जो ज्येष्ठ पुत्र है वह सुयोग्य बन गया है

और मैं साधना करने के लिए गमन करूँ। तो उन्होंने अपने जेठे पुत्र को राष्ट्र दे करके यह मनु वंश की चर्चा हैं। वह अपने राष्ट्र को त्याग करके भयङ्कर वन में पहुँचे। व्रतकेतु राजा अपने में यह अनुसन्धान करने लगे कि साधना के लिए तो मैंने राष्ट्र को त्याग दिया है, अब मुझे साधना करनी है। तो वह मुञ्जुक ऋषि के द्वार पर पहुँचे और मुञ्जुक ऋषि से कहा कि प्रभु! मेरा अन्तःकरण कैसे पवित्र होगा? तो मुञ्जुक ऋषि ने कहा कि तुम अपने वायुमण्डल को पवित्र बनाओ, उसके पश्चात् तुम, साधना करो। उन्होंने कहा प्रभु वायुमण्डल कैसे पवित्र होगा? तो **साधना के लिए वायुमण्डल का पवित्र होना बहुत अनिवार्य है।** तो श्वेतकेतु (व्रतकेतु) मङ्गल वृहे व्रतकेतु भयङ्कर वनों में मुञ्जुक ऋषि से उसके क्रियाकलाप के सम्बन्ध में प्रश्न करने लगे। उन्होंने कहा तुम याग करो। उन्होंने भयङ्कर वनों मे से साकल्य एकत्रित किया। नाना प्रकार की औषधियों का मिश्रण हो गया उसमें सुगन्धित पदार्थ, पुष्पीवाल पदार्थ की वृद्धि करने वाली थी। उस औषधियों के साकल्य को एकत्रित किया और वह मुञ्जुक ऋषि के यहाँ एक कामधेनु गऊ रहती थी। उस गौ घृत को लिया और श्रद्धामयी जो घृत होता है वह याग की सफलता का एक मूल, मूलक बन जाता है। तो उन्होंने याग का प्रारम्भ किया। मुञ्जुक ऋषि ने उस याग का प्रारम्भ कराया और अपने शुद्ध हृदय से निर्भय बन करके उन्होंने याग का प्रारम्भ किया। जब याग प्रारम्भ हुआ तो उस भयङ्कर वन में सिंहराज और मृगराज भी ध्वनि को ध्वनित अपने में श्रवण करने लगे।

मुझे कुछ ऐसा स्मरण है मुनिवरो! देखो वहाँ कहीं से भ्रमण करते हुए भारद्वाज गौत्रीय विश्वातम ऋषि महाराज कहीं से भ्रमण करते हुए वह आ गए। मुञ्जुक ऋषि भी विद्यमान हैं, उन्होंने मुनिवरो! देखो साकल्य को अग्नि में अर्पित वह भी करने लगे। तो उन्होंने कहा ऋषिवर उनके अन्तःकरण को मुञ्जुक ऋषि ने दृष्टिपात किया और मुञ्जुक ने कहा कि तुम्हें यह प्रतीत है कि यह जो व्रतकेतु जो याग कर रहे हैं

यह क्यों कर रहे हैं? उन्होंने कहा प्रभु मैं तो नहीं जानता, उन्होंने कहा यह **आत्म शुद्धि के लिए कि यह वायुमण्डल को पवित्र बनाएँगे,** बाह्य जगत् जब तक हमारा पवित्र नहीं होगा हम अन्तर्जगत् को पवित्र नहीं बना सकते। इसलिए यह बाह्य जगत् का शोधन कर रहे हैं। तो उन्होंने ऐसा स्मरण है उन्होंने कहा तो क्या मैं नहीं बना सकता? तुम्हारी विचारधारा में तमोगुण छाया हुआ है और वह तमोगुण की तरङ्गों का वायुमण्डल अग्नि के ऊपर विश्राम करके वायु में प्रवेश कर गए तो यह वायुमण्डल पवित्र नहीं बन सकेगा। इसलिए तुम अपनी विचारधारा को पवित्र बना करके आओ। उन्होंने कहा मुञ्जुक ऋषि से प्रभु आप यथार्थ कहते हैं, मेरा रजोगुणी विचार रहा है और मैं सतोगुणी बनाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा जाओ तपस्या करो। तो उन्होंने देखो याग का प्रारम्भ किया तो राजा व्रतकेतु ने याग सम्पन्न किया। वह महात्मा मुञ्जुक ऋषि के सहयोग से याग में वायुमण्डल पवित्र हो गया। तो वायुमण्डल में जो शब्दों की धारा हैं अथवा ध्वनियाँ हैं वह गृह में क्या आश्रम में क्या वह वायु में भ्रमण करती रहती हैं, अग्नि की तरङ्गों पर विद्यमान हो जाता है। यह ज्ञान हमारे समीप परम्परागतों से ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में नृत्य करता रहा है। तो मुञ्जुक ऋषि महाराज ने एक वर्ष तक इस प्रकार याग का प्रारम्भ किया–**प्रातःकालीन याग होना, मध्यकालीन अध्ययन होना और देखो सायँकाल को याग के पश्चात् चिन्तन करना।** मुनिवरो! देखो उनका हृदय एक वर्ष के पश्चात् उनकी जो भावना रजोगुण की जो भावना वह समाप्त हो गई हृदय में से और उनका बाह्य जगत् पवित्र बन गया।

वह साधना में परणित हो गए, साधना उनकी बड़ी विचित्रता में आगे चल करके ब्रह्मवेत्ता बने। तो मुनिवरो! देखो वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय हमारा यह कि हम अपने इस मानवीय जीवन को इतना महान् , इतना पवित्र बनाएँ कि हमारा बाह्य जगत् अन्तर्जगत् दोनों पवित्र हो जाएँ और हम ब्रह्म को एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करने

लगें। तो मुनिवरो! हमारा अन्तर्हृदय निरभिमानी बन सकता है और निरभिमानी बन करके हम वेद रूपी प्रकाश को अपना करके स्वतः प्रकाशमान हो जाएँ। मेरे प्यारे! देखो यह वाक् मैंने अभी-अभी प्रकट किया है अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

ओ३म् श्रवाणि गतम् मनाः वाचन्नम वृहे कृतम्

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव वेद और दर्शन की वार्ता प्रकट कर रहे थे, क्योंकि यह जो मानवीय दर्शन है यह परम्परागतों से ही विचित्र माना गया है। हम जब पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत-प्रोत होते हैं तो हम अपने में अपने को धन्य स्वीकार करते रहते हैं। बहुत समय हो गया है इनका अध्ययन करते हुए मुझे किसी-किसी काल में यह असमञ्जस हो जाता है कि पूज्यपाद के हृदय में इतने ज्ञान की धाराओं की उपलब्धियाँ होती रहती हैं, कितनी महान् स्मरण शक्ति है जिस स्मरण-शक्ति के द्वारा यह अपने उद्गीत गाते रहते हैं और ऐसे अथाह समुद्र में चले जाते हैं वहाँ से नाना रत्नों को ले करके आते हैं। अब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव याग की कितनी महान् विवेचना कर रहे थे, कितना इनका विवेचनामयी हृदय अगम्यमयी ज्योति वाला जो उद्देश्य है वह हमारे हृदयों को स्पर्श करता रहता है।

वर्तमान काल

परन्तु आज पूज्यपाद गुरुदेव को मैं तो कुछ परिचय देने चला आता हूँ और वह क्या है कि जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, जहाँ हमारे यह प्रेरणादायक शब्द जा रहे हैं उस स्थली पर एक याग का समापन हुआ है। मेरा हृदय बड़ा गद्गद् रहता है कि यह जो काल है बड़ा विचित्र काल रहा है। यहाँ सुरापान महान् मांसाहार की एक

गतियाँ मानव के हृदय में गतिशील हो रही हैं, परन्तु वायुमण्डल में अशुद्ध शब्दों का मिलान हो रहा है। उसके पश्चात् भी मैं अपने यजमान को यह वाक् उच्चारण करता रहता हूँ हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। यह जो काल चल रहा है वाममार्ग का काल चल रहा है। यहाँ उलटे मार्ग पर जाने वाला समाज है, जब यह एकान्त स्थली में विद्यमान होता है, तो यह मांस और सुरापान की ही चर्चा करता है, यह अपने में कृतियों की चर्चा करता है, परन्तु महानता की चर्चा इसके द्वार से नष्ट होती जा रही है। मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह वर्णन कराया था कि याग ऐसा विचित्र एक कर्म है जो सृष्टि के प्रारम्भ से चला आ रहा है, सृष्टि के प्रारम्भ से यह याग कर्म चला आ रहा है, सुगन्धित होना चाहता है वह किसी भी स्थली पर रहता है किसी भी रूप में रहता है उसके हृदय में एक आकाँक्षा है कि मैं सुगन्धित हो जाऊँ। सुगन्धि के भी नाना अग्नियों का चयन करता रहता है। परन्तु जब मैं यह विचारता हूँ कि यह नाना प्रकार की जो अग्नि हैं यह अपने में निहित हो करके हमें विचित्र बना सकती हैं यदि हम उनको जानने का प्रयास करें।

अज्ञानता का जन्म

देखो, जब यहाँ वृन्नम् व्रहे महाभारत के काल के पश्चात् की वार्ता हैं। पूज्यपाद गुरुदेव तो इन वाक्यों के इतने विस्तृत रूप से जानते नहीं, परन्तु मैं इनको परिचय कराता रहता हूँ। हमारा यह परिचय रहता है कि महाभारत के काल के पश्चात् यहाँ नाना प्रकार के विचार और वाममार्ग सम्प्रदाय का यहाँ एक ऊर्ध्वा में रूप धारण किया गया– उस वाममार्ग में देखो याग और मेरी प्यारी माताओं का तिरस्कार किया। दोनों का तिरस्कार जब महाभारत काल के पश्चात् हुआ, नाना प्रकार के मतमतान्तरों में यह समाज यह मानव समाज का एक बटवारा बन गया। नाना मत-मतान्तरों क्या, सबसे प्रथम बौद्ध काल में यह कहा

गया, जब बौद्ध का काल आया कि मैं ऐसे वेद को स्वीकार नहीं करता, जिसमें हिंसा हो। उसका परिणाम यह हुआ कि वाममार्ग और वह बौद्ध काल के मानव ने यह नहीं विचारा, न महात्मा बुद्ध ने यह विचारा कि इस वेद का अध्ययन तो करना चाहिए। जब एक-एक वेद के मन्त्रों के जो भी अर्थ हैं, वैज्ञानिक अर्थ हैं मानव के व्यावहारिक अर्थ हैं उसको न मानना ही एक बुद्ध समाज का ह्रास हो गया, बुद्ध समाज में बौद्धिक ऋषियों ने उन्होंने भी मांस का आहार आरम्भ किया। उसका परिणाम यह हुआ कि यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रादुर्भाव हुआ। महात्मा बुद्ध के कार्यकाल के पश्चात् नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनीं और वह जो वाममार्ग समाज था उसने वेदों की अवहेलना की। यागों में मांस की आहुतियाँ प्रदान करने लगे, तो याग का तिरस्कार हो गया। वैदिक साहित्य का ह्रास हो गया। जब मैं विचारता हूँ कि यहाँ जैन काल में भी ऐसा हुआ उन्होंने कहा कि मैं तपस्या को प्रथम स्वीकार करता हूँ। वेद के एक अङ्ग को अपनाता है तपस्या काल परन्तु देखो सर्वांग अङ्ग वह प्राणी होता है जो याग जो सुगन्धि और विचार सुगन्धि और इसका समन्वय करके परणित होता है, तो वह सर्वत्र पूर्ण देखो वह एक समिधा के रूप में उसका जीवन बन जाता है।

जब मैं यह विचारता हूँ कि कितना तिरस्कार हुआ है मेरी पुत्रियो का, यहाँ देवियों का तिरस्कार हुआ, तो देखो यहाँ दुरीता में देखो सन्तान का जन्म होना प्रारम्भ हुआ। परतु देखो उसके जन्म के पश्चात् वैदिक सिद्धान्तों की अवहेलना करने वाला समाज बन गया। जब मैंने यह विचारा कि अस्वतम् ब्रह्मः महात्मा बुद्ध का परिणाम यह बना कि बौद्ध काल के जानने वालों का राष्ट्र हुआ। महात्मा महावीर के मानने वालों का राष्ट्र हुआ, जो यहाँ जितना वैदिक साहित्य था वह कुछों को त्याग करके अग्नि के मुख में परणित कर दिया था। कि ऐसे हम वैदिक साहित्य को नहीं स्वीकार करें, इसमें हिंसा है, परन्तु भोले प्राणियों ने उनका अध्ययन नहीं किया। उसका अध्ययन कर लेते तो यह अज्ञानता

या याग का तिरस्कार नहीं हो सकता था। याग का तिरस्कार जब होता है, जब अज्ञान की प्रतिभा का जन्म होता है तो अपने में वह सुगन्धि को नष्ट कर देता है। इसी प्रकार जब देखो यहाँ वैदिक काल समाप्त हुआ तो इसमें इतनी हीनता को जैन और देखो बौद्ध समाज ने इस समाज को इतना निर्दयी और ऋणी बना दिया कि उसमें ऐसी निर्लज्जता आ गई, कृतियाँ बन गई, वीरता का देखो सन्निधान समाप्त हो गया। उसका परिणाम यह हुआ कि नाना प्रकार के देखो यहाँ यवनों का काल आ गया। यवनों के काल में यवन यहाँ आए, दूसरे राष्ट्रों से आए परन्तु देखो उन्होंने आ करके यहाँ वैदिकता को नष्ट करना प्रारम्भ किया और प्यारी माताओं के शृङ्गार को हनन करने का प्रयास किया। नाना प्रकार के मत-मतान्तरों में नाना प्रकार की रूढ़ियों में यह समाज परणित हो गया। **यह संसार पृथ्वी का प्राणी नाना प्रकार की रूढ़ियों में महाभारत काल के बाद हुआ है।** महाभारत के पूर्वकाल का साहित्य यह नहीं कहता है कि यहाँ रूढ़ियाँ थीं, यहाँ नाना प्रकार के मत-मतान्तरों वाला समाज था–कोई मत-मतान्तर नहीं था।

विचित्र राष्ट्र

मुझे वह काल मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में रहा हूँ मैंने उस काल को भी दृष्टिपात किया है। उस काल में अश्वमेध का याग करने वाले राजा अपने राष्ट्र में यह घोषणा करते रहते थे कि देखो यहाँ प्रत्येक प्राणी को याज्ञिक बनना चाहिए। प्रत्येक गृह में से वेद की ध्वनि होनी चाहिए, चाहे वह किसी का गृह हो, परन्तु वेद की ध्वनि होगी, तो यहाँ ऋण से उऋण होने वाला समाज बन जाएगा। राजाओं के यहाँ पूर्वातीत के काल में यह घोषणा होती रही है। महाराजा अश्वपति ने तो अपने राष्ट्र में यह घोषणा कराई थी कि मेरे राष्ट्र में प्रत्येक प्राणी याज्ञिक होना चाहिए। याज्ञिक होना याग में केवल अग्नि में ही आहुति देना नहीं है। **याग का अभिप्राय यह है कि यज्ञ में आहुति होनी**

चाहिए परन्तु सदाचार और शिष्टाचार भी होना चाहिए। सदाचार और शिष्टाचार की वेदी वाला जो राष्ट्र होता है, जो अपने राष्ट्र में वेद के प्रकाश को पनपाता रहता है, परन्तु देखो ऐसा जो विचित्र राष्ट्र है वही तो समाज को महान् बना सकता है। जो राजा स्वतः याग में परणित होने वाला हो, अपने गृह को सुगन्धित बनाने वाला हो, वही तो महान् बनेगा।

अर्थों का अनर्थ

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इससे पूर्वकाल में राजा रावण की चर्चा कर रहे थे। राजा रावण के राष्ट्र में भी यह घोषणा थी कि मेरे राष्ट्र में याज्ञिक प्राणी होने चाहिएँ और वह स्वतः अश्वमेध याग भी करते थे। प्रजा और राजा मिल करके अश्वमेध याग होता है। परन्तु यहाँ महाभारत काल के पश्चात् के विद्वानों ने, उनको मैं विद्वान तो नहीं कह सकता परन्तु अर्थों का अनर्थ करके ही याग में घोड़े के मांस की आहुति देना प्रारम्भ किया। अश्व उसे कहते हैं जो राजा है प्रजा को ऊँचा बनाने वाला हो और अश्वमेध याग करने वाला हो, अश्व नाम राजा और प्रजा मेघ जो दोनों मिल करके याग करते हैं उसको अश्वमेध याग कहते हैं। परन्तु देखो यहाँ अर्थों का अनर्थ हुआ। अजामेध याग उसे कहते हैं जो द्वितीयों को अपने हृदयों को विजय करने वाला हो, द्वितीय राष्ट्र को विजय करने वाला हो। परन्तु देखो अजामेध का अभिप्राय आधुनिक इस महाभारत के काल के पश्चात् रसास्वादन करने वालों ने वाममार्ग ने यह अपनाया कि बकरी के मांस की आहुति देना प्रारम्भ किया। परन्तु देखो यह विद्वानों की सब रसना स्वादन की चर्चाएँ हैं। कोई मानव यह कहता है कि मेरी मांस से उदर की पूर्ति होती है। तो मैं यह कहता हूँ कि यह तुम्हारी रसना की पूर्ति है। अरे! तुमने अपने शरीरों को एक मुर्दालय का एक स्थली बनाई है, जिसको तुम पान करते रहते हो और यागों का तिरस्कार करने से समाज यह बन गया है। आज

मैं संसार के भ्रमण करने के पश्चात् मैं यह उद्गीत गाने लगूँ कि यहाँ का संसार का प्राणी इस समय वर्तमान काल में सौ अर्वतियों में पिच्यानवें प्रतिशत के लगभग देखो मांस और सुरापान का पान कर रहा है। परन्तु देखो इतना प्राणी संसार में रह रहा है, तो यह कितना अपने शरीरों को यह नष्ट कर रहे हैं। तो आज हम यह कल्पना करने लगें कि राम का काल आ जाए या कृष्ण की वह राजसभा आ जाए और ऋषि-मुनियों का वह काल आ जाए तो यह मुझे बड़ा आश्चर्य में दृष्टिपात आता रहता है। मैं इसको स्वीकार किसी-किसी काल में करता रहता हूँ कि देखो बीज का अँकुर तो रह रहा है परन्तु देखो जब हम यह विचारते हैं कि मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेवों से यह चर्चा करता रहता हूँ हे भगवन्! इस प्रकार का यह जो समाज बन रहा है यह जो वाममार्ग बन रहा है यह कहाँ जाएगा प्रभु!

जीवन का सौभाग्य

परन्तु आज मैं यही कहने आया हूँ कि हे यजमान! मेरा अन्तर्हृदय गद्गद् हो रहा है ऐसे वाममार्गी काल में जो द्रव्य मुद्रा को विशेष मान लिया है, ऐसे काल में देखो अपने द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। यह तेरे जीवन का सौभाग्य है, तेरी मानवीयता का सौभाग्य है, मैं तो सदैव यजमान के समीप यह कहा करता हूँ कि तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे जिससे तू अपने द्रव्य का सदुपयोग करता रहे अपने गृह में। हमारे यहाँ महाभारत के काल से पूर्व राम के काल के समाज की गाथा देखो उनकी विचित्रता का वर्णन करता है। राम के काल में माता-पिता के प्रथम पुत्र का हनन नहीं होता था, मृत्यु नहीं होती थी। उसका मूल क्या है? उसके मूल में प्रत्येक गृह में याग होता था। माता-पिता संयमी बन करके और ओजस्वी सन्तान को जन्म देते थे। जब माता अपने गर्भ-स्थल में ही बालक को बनाना प्रारम्भ करती थी, वेद की ध्वनियों की ध्वनि में ध्वनित कर रही अपने अङ्ग-अङ्ग को

जब वेद की ध्वनि से ध्वनित हो रहा है तो माता के गर्भ में बालक का निर्माण हो रहा है। परन्तु वह निर्माण इतने पूर्ण आयु को आत्मा अर्पित संस्कारों से माता-पिता से पूर्व उस बालक का हनन नहीं होता। माता-पिता अपने जो सन्तानों का उपार्जन है, अन्त में देखो वह प्रसन्न हो करके संसार से जाते हैं।

दूषित वायुमण्डल का परिणाम

आज संसार नार्किक है क्योंकि देखो आहार और व्यवहार तिरस्कार होने से यह होता है कि माता का पुत्र माता के प्रथम समाप्त हो जाता है। माता का अन्तःकरण दुखित हो जाता है, वही वायुमण्डल की धारा गृहों में प्रवेश होती हैं, वही वायुमण्डल में जाती हैं, विज्ञान का दुरुपयोग हो गया है, तो वायुमण्डल आज दूषित हो रहा है। उसके वायुमण्डल के दूषित होने का परिणाम यह है कि हमारे यहाँ देखो ध्वनि पवित्र नहीं रहती है, ध्वनि में अध्वनि बन गई है क्योंकि संसार में एक वस्तु का मिलन हुआ है और उसका विच्छेद होता है तो वही अपार कष्ट है। परन्तु जो वस्तु हमें प्राप्त हुई है वह ज्यों की त्यों बनी रहती है तो उसका कष्ट नहीं होता और वह उसमें रुग्णता नहीं आती। तो इसीलिए मैंने भगवान् राम के काल की चर्चाएँ की हैं।

उससे प्रथम यह महाभारत का काल, जिस भी काल में मानव स्वार्थ में परणित हो जाएगा, राष्ट्र त्याग में नहीं रहेगा तो वहाँ माता-पिता और पुत्र का वियोग सदैव अपने में ग्रहण करते रहेंगे और जब मानव निस्वार्थ हो जाता है, कर्म के आधार पर वह अपने जीवन को व्यतीत करता है, कर्त्तव्यवाद की वेदी पर आता है तो न तो विज्ञान का दुरुपयोग होता है न यहाँ देखो यह दूषित वायुमण्डल बनता है। यह पवत्रिता में परणित रहने वाला ज्ञान और विज्ञान अपने में सार्थक बन करके रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन कराने आया हूँ कि आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है, वह संसार का पृथ्वी मण्डल

पर कोई भी राष्ट्र हो, परन्तु वह राष्ट्र नहीं रहा है, वह केवल रक्तभरी क्रान्ति की एक स्थली बनती चली जा रही है। यहाँ मत-मतान्तरों के कारण इस पृथ्वी मण्डल पर एक मानव मानव को हनन करने के लिए तत्पर हो रहा है। उसके मूल में क्या है? राजा हिंसक बने हुए हैं, राजा हिंसा की वेदी पर परणित हो रहा है। जब राजा हो गया तो प्रजा भी हिंसक बन गई। उसका परिणाम क्या हो रहा है? उसका परिणाम यह है कि मानव का हृदय अशान्ति के तट पर तत्पर रहता है।

पवित्र राष्ट्र की राह

मैं यह विचारता हूँ कि जब मेरे से यह प्रश्न किया जाए। राजा यह कहे कि इसका निवारण क्या है? इन वाक्यों का तो निवारण मैं उच्चारण किए देता हूँ। मैंने कई काल में राष्ट्रीय निवारणों की चर्चाएँ प्रकट की हैं। संसार के सब राजा एकत्रित हों, अपने-अपने जो सम्प्रदाओं के आचार्य हैं अथवा रूढ़िवादों के जो सम्प्रदायों के आचार्य उनकी एक पंक्ति लगाई जाए और उसका शास्त्रार्थ होना चाहिए। **जो ज्ञान, यज्ञ और देखो मानवीय दर्शन पर घटित हो जाएँ उसको उसी सिद्धान्त को राजा को अपनाना चाहिए।** उस सिद्धान्त को अपना करके अहिंसा परमोधर्मः की वेदी को अपना करके, जब क्रियाकलाप करेगा तो वही राम का राष्ट्र पुनः से आ सकता है। परन्तु देखो जब यहाँ नाना प्रकार के मत-मतान्तर केवल अपनी राष्ट्रीय सत्ता के लिए इनसे विचारा नहीं जाता, उनसे वाक् नहीं की जाती, तो राजा और प्रजा दोनों हिंसक बनते चले जा रहे हैं।

जब मैं विचारता हूँ कि मौलिक सिद्धान्त को लिया जाए, विज्ञान के ऊपर जो तत्पर हो, धर्म और मानवता के ऊपर जो तपस्या में परणित हो जाए, उसी को तो हमें स्वीकार करना है। परन्तु जब हम वेद के उस अङ्ग को लेते हैं, वेद के सर्वांग इन विचारों को लेते हैं, तो उसमें विज्ञान है, उसमें मानवता है, उसमें मानवीय दर्शन का निर्माण है, तो

उस धर्म को हमें अपना चाहिए। परन्तु राष्ट्रीयता का निवारण केवल यही है कि हम उसको निवारण इन रूपों में कर सकते हैं। चाहे जितने मत-मतान्तर हैं इनको समाप्त किया जाए। इनको एक वेदी पर लाया जाए और एक वेदी पर ला करके जब एक वेदी का प्राणी हो जाता है, एक विचार हो जाता है वायुमण्डल में उनके शुद्ध विचार प्रवेश करेंगे, तो वायुमण्डल पवित्र होगा, राष्ट्र पवित्र बनेगा। मानव में से विचारों की सुगन्धि आना प्रारम्भ हो जायेगा तो इसीलिए मैंने बहुत पुरातनकाल में कहा है कि राष्ट्रयीता का एक ही निवारण होता है। क्योंकि इस राष्ट्र का निर्माण सबसे प्रथम भगवान् मनु ने किया था। तो मनु से एक समय एक ऋषि ने यह प्रश्न किया कि हे भगवन्! हे मनु जी! तुमने राष्ट्र का निर्माण क्यों किया है? तो भगवान् मनु ने यह कहा है कि राजा के राष्ट्र में मछली से ले करके प्राणी तक किसी का भी हनन नहीं होना चाहिए। और क्योंकि देखो राष्ट्र का निर्माण इसलिए होता है कि यहाँ सम्भवबृहे मानवता को कर्त्तव्यवाद के लिए मानव को शिक्षा दी जाए। राष्ट्रीय है क्या? राष्ट्र अपने में महान् नहीं है, परन्तु देखो राष्ट्र का पालन राष्ट्र इसलिए निर्माणित होता है कि वह अपने मानव को कर्त्तव्य की वेदी पर ला सके। इसलिए महापुरुषों का निर्वाचन होता है और राजाओं को चुनौती उसको वशिष्ठ की चुनौती प्रदान करके कहा जाता है कि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना, मानव समाज को कर्त्तव्यवाद में लाने के लिए तत्पर हो। परन्तु देखो मनु जी का सिद्धान्त, मनु जी का राष्ट्र का निर्माण किया हुआ, दिखाया मार्ग अपनाओ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यह कहा करते हैं, कि देखो जब वह समुद्र के तट पर तपस्या करने पहुँचे, तो कमण्डलों में जब तर्पण करने लगे, तो जल को जब कमण्डलों में लिया, तो उसमें एक मछली आ गई। वह जब कमण्डलों को समुद्र में पुनः रिक्त करने लगे, तो मछली अपनी वेदनामयी विचार व्यक्त करती है क्योंकि राजा वह होता है जो प्रत्येक प्राणी के विचारों को अपने में देखो अनुमान के द्वारा उनका मन्थन करने वाला

हो। तो भगवान् मनु ने उस मछली को दृष्टिपात किया, तो मछली कहती है, हे भगवन्! हे राजन्! मैं इसलिए तेरे समीप आई हूँ कि समुद्रों का यह सिद्धान्त है कि बड़ी मछली छोटी को आहार करती हुई वह प्रबल बन जाती है। मेरी इच्छा यह है मैं आपके कमण्डलों में आई हूँ, आपकी शरण में आई हूँ, आप मेरी रक्षा करो। भगवान् मनु के कमण्डलों में वह मछली पनपती रही, उन्होंने एक गढेला बनवाया, उसमें मछली का प्रवेश किया, उसमें पनपती रही। तो वही मछली देखो जब प्रबल हो गई, विशाल बन गई, वह अपने समुद्रों में चली गई और उसने चलते समय यह कहा, हे मनु कुछ काल के पश्चात् भविष्यवाणी करने लगी, हे मनु! कुछ काल के पश्चात् समुद्रों में जल पलावन आएगा और मेरा मिलन समुद्रों से होगा और तुम एक नौका बनवा लेना, वह नौका मेरे सींग से मेरे अनुभूतियों से उसको जकड़ देना। मैं तेरी नौका की रक्षा करूँगी। **वही तो प्राणी रक्षक होता है जिसकी तुम रक्षा करो। जिसकी तुम रक्षा करोगे वह तुम्हारी रक्षा करेगा।** शरीर के लिए तुम महान् बनोगे तो शरीर तुम्हें महान् बना देगा।

मेरे प्यारे देखो, यह वाक् गुरुदेव ने बहुत कुछ उच्चारण किया है, परन्तु देखो **राष्ट्र का संसार में यदि कोई राजा हुआ है तो भगवान् मनु हुआ है।** उन्होंने किसी नगरी का निर्माण किया तो अयोध्या का किया, क्योंकि अष्ट चक्रा नौ द्वारों वाली एक नगरी का निर्माण किया था, उसमें मनु महाराज के लगभग एक लाख पिचहत्तर हजार पाँच सौ बावन वंशजों ने राष्ट्र का पालन किया और वह पालन इसी आधार पर किया कि समाज को कर्त्तव्यवाद में लाना है। इससे माता का वियोग नहीं दृष्टिपात किया जाता, पिता का वियोग नहीं दृष्टिपात किया जाता। यह वियोग जब नहीं होगा जब मानव सार्थक बनेगा, पवित्र बनेगा। माता अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी, राजा अपने कर्त्तव्य का पालन करे, समाज कर्त्तव्य का पालन करे और राजा प्रजा को कर्त्तव्यवाद में लाता रहे और वह प्रजा का सेवक स्वीकार करे, तो राष्ट्रीयता कुछ रह पाएँगी।

वर्तमान राजाओं को प्रेरणा

राष्ट्रीयता तो देखो आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद चल रहा है, वह कैसा है? वह समाज को सम्प्रदायों को अपना-अपना करके अपने में अपने को देखो राजा बनाना चाहता है। परन्तु हे राजन्! राष्ट्रीयवाद का निवारण करना होगा, तो मुझे वह कर्त्तव्य करना होगा जिससे वह समाज महान् बन जाए। जिससे एक दूसरा प्राणी, प्राणी के रक्त का पिपासी न बन जाए, पिपासी अज्ञानता में बनता हैं इसलिए तेरे द्वारा ज्ञान होना चाहिए, पिपासी स्वार्थ में होता है, कर्त्तव्यवाद का पालन कर। तो मुनिवरो! देखो, यह राष्ट्रीयवाद का निवारण है। नाना प्रकार की सम्प्रदायों में बँटने वाला समाज कदापि भी महान् नहीं बन सकता।

स्वार्थ भावना का परिणाम

मैंने बहुत पुरातनकाल से इस समाज को दृष्टिपात किया। महाभारत काल के पश्चात् स्वार्थवाद आया था और स्वार्थवाद क्या था? महाराजा शान्तनु में सबसे प्रथम स्वार्थवाद की भावना आई उसने क्या स्वार्थवाद दिया? अपने पुत्र को कहा तू ब्रह्मचारी रहे और मेरा संस्कार हो। पुत्र ने ब्रह्मचर्य के वश में प्रतिज्ञा की और पिता का संस्कार हुआ। उसका परिणाम यह हुआ कि महाभारत काल में स्वार्थवाद आया और स्वार्थवाद में विधाता-विधाता रक्त के पिपासी बन गए अज्ञानता में। यदि शान्तनु के हृदय में यह स्वार्थ की भावना न होती, तो यह अनुचित क्रियाकलाप नहीं होता, तो यह समाज नष्ट नहीं हो सकता था, विद्वानों का ह्रास नहीं हो सकता था। परन्तु देखो भावी प्रबल है। जब मैं यह उद्गीत गाता हूँ तो यह मानवीयता का ह्रास हुआ। उसका परिणाम यहाँ मेरी पुत्रियो के शृङ्गारों का हनन किया गया। उसके पश्चात् नाना प्रकार की अज्ञानता में सम्प्रदायों का जन्म हुआ, वह सम्प्रदाएँ आधुनिक काल में जितनी पनप रही हैं, राष्ट्र की हीनता है क्योंकि राजा इसलिए नहीं होता है।

धर्म का स्वरूप

एक ईश्वरवाद में कुछ कह रहा है, एक धर्म की विवेचना कुछ कह रहा है। **धर्म केवल मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है।** वह इन्द्र देखो इन्द्रियों वाले धर्म को ला करके राजा को उसकी व्याख्या करनी चाहिए। जब राजा देखो किसी भी मत से मठ की पूजा में जाता है, वहाँ उस धर्म की प्रशन्सा करने लगता है, वाममार्गीयों में जाता है वहाँ वाममार्ग की प्रशन्सा करता है, गुरुओं में जाता है वहाँ गुरुओं की प्रशन्सा कर रहा है, यह राजा निर्लज्ज हो जाता है। ऐसे राजा नाना धर्म की जो चर्चा कर रहा है। अरे! धर्म तो भोले प्राणी व्याकरण की दृष्टि से एक ही धर्म कहलाता है। उस धर्म को अपनाना चाहिए। वह धर्म क्या है? मुनिवरो! देखो नेत्र सुदृष्टि दृष्टिपात करेंगे तो मानव का पूजन होगा और वह कुदृष्टिपात करेगा तो उसका अन्तरात्मा उसे धिक्कारने लगता है। वह नेत्रों में धर्म समाहित रहता है। स्वाहा वाणी सदैव सत्य उच्चारण करती है तो उसका धर्म है, अशुद्ध उच्चारण करती है, तो उसका अधर्म बन जाता है। **वाणी का धर्म सत्य ही उच्चारण करना है।** सुगन्धि में मानव प्रसन्न रहता है, दुर्गन्धि में देखो अपने अन्तर्हृदय को धिक्कारता है। अरे! सुगन्धि ही उसका जीवन है देखो इसी प्रकार स्पृश्यता है उसको प्रेम से मगन हो करके ज्ञान के द्वारा स्पर्श करता है वह उसका धर्म है। मेरे प्यारे श्रोत्रों में शब्द आते हैं।

आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हमें इस समाज को ऊँचा बनाना है, मानवीयता की रक्षा करनी है, मानव-दर्शन को अग्रगणीय बनाना है और राष्ट्र के निवारण के लिए मैंने चर्चा की है कि प्रत्येक जो रूढ़िवादी आचार्य हैं वह एकत्रित हो करके राजा के सन्निधान में वह अपने-अपने विचारों की व्याख्या करें और जो विचार विज्ञान से और मानवीयता से स्थिर हो जाए वह विचार वही धर्म रहना चाहिए मानव का।

आज का विचार यह क्या कह रहा है? आज का विचार हमारा केवल यही है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करा रहा था क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव का वह विचार है जब इस संसार में कोई भी रूढ़िवादी नहीं था। वह मानवता के याग की चर्चा करते हैं, वह विज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। आज का विज्ञान भी रूढ़िवादी बना हुआ है। परन्तु उच्चारण करने के लिए तो बहुत कुछ वाक् हैं परन्तु अब मेरा विचार यह समाप्त ही होने वाला है। आज का विचार केवल मैं यह उच्चारण कर रहा हूं कि मैं पूज्यपाद गुरुदेव को परिचय करा रहा हूँ कि यह काल एक वाममार्ग काल है, जहाँ राजा भी वाममार्गीय है और मतान्तर भी वाममार्गीय हो गए हैं। देखो कोई आचार्य गुरु जी कहे जाते हैं, उनके मानने वाले रक्त को अपने में भक्षण कर जाते हैं, उससे अपने शरीरों को बना रहे हैं। शरीरों का निर्माण केवल इसलिए कि विलासता बनी रहे। अरे! यही तेरा कर्त्तव्य नहीं है। हे मानव! तुझे तो संसार को महान् बनाना है क्योंकि **यह प्रभु की सृष्टि है और प्रभु की सृष्टि को महान् बनाना यह हमारा कर्त्तव्य है।**

आज का विचार क्या है? हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरा हृदय गद्गद् होता है जब यजमान के देखो यह अद्भुत याग का आयोजन होता है। अहिंसा से रहित होता है और द्रव्य का सदुपयोग किया जाता है। **जब प्रत्येक गृह में याग के द्वारा द्रव्य का सदुपयोग होता है वहाँ आपत्तियों का ह्रास हो जाता है।** तो यह आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा चाहूँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत से अपने वाक् प्रकट किए। वाक्यों में बड़ी सार्थकता मुझे प्रतिपादित हो रही है, परन्तु यह इनकी जो वेदना है, इनकी जो विडम्बना है वह बड़ी विडम्बित मेरे

हृदय में समाहित है। इसीलिए **यह होगा जब प्रभु की अनुपमता होगी,** तो प्रायः ऐसे राजा भी होंगे, प्रजा भी होगी। ऐसा कोई वाक् नहीं है परन्तु **संसार में अपने को शुभ क्रियाओं में अपने को रत्त रहना चाहिए। अपने विचारों को महानता देना जिससे वायुमण्डल में वह विचार भ्रमण करते रहें। किसी न किसी काल में वह महान् विचार मानव के अन्तःकरण को छू करके पवित्र बना सकते हैं।** यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द रहो!

दिनाँक : 4 नवम्बर, 1985
समय : प्रातः 10:00 बजे
स्थान : काशीपुर

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. वेद का प्रकाश है वह मानव को सुन्दर बनाने वाला है।
2. मानव को साधक बनना चाहिए। साधना में परणित रहना चाहिए। आहार और व्यवहार दोनों सुन्दर होने चाहिए।
3. संसार में जो यौगिक साधना में जाना चाहता है, उसको आवश्यकता है कि वह अपने मन को संयम में लाए।
4. जब मानव के प्रत्येक श्वाँस के साथ उस महान् चेतना का स्मरण होगा तभी मन को संयम में लाया जा सकता है।
5. मानव का जो मन है वो तपने से सुन्दर बनता है।
6. तप की जो मीमांसा वह सबसे प्रथम आहार है। क्योंकि आहार उत्तम होना चाहिए, आहार में हिंसा के विचार नहीं होने चाहिए।
7. हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा का सदैव गुणगान गाया जाता है।
8. जब हम प्रभुः की प्रतिभा पर विचार विनिमय करने लगते हैं तो हमारा जीवन सुन्दर होने लगता है।
9. प्रभु की आराधना करते हुए ज्ञान से सदैव प्रकाश में रहें।
10. ईश्वर का न मानना ही संसार में अन्धकार है और ईश्वर का स्वीकार करना प्रकाश कहा जाता है।
11. राष्ट्र का जो प्राण है वह ईश्वरवाद है।
12. राजा के राष्ट्र में यज्ञ कर्म होना यज्ञ आदि कर्मों का होना यह राष्ट्र की शान्ति मानी गयी है।
13. जो महापुरुष होते हैं उनके जीवन में देखा हिंसा नहीं होती।
14. जो मानव दूसरे के रक्त को पान करने वाला होता है वह मानव संसार में साधक नहीं बन सकता।
15. जो मानव दूसरों को नष्ट करने की विचारधारा बनाता है वह संसार में स्वयं नष्ट हो जाया करता है।

।। ओ३म् ।।

स्मृति

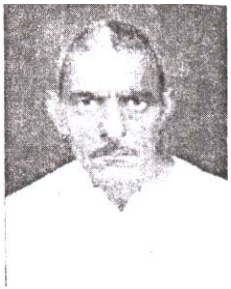

स्वर्गीय श्री जगदीश त्यागी

श्री राजकिशोर त्यागी जी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने प्रकाशन कार्य के लिए 1100/- रु. का सात्विक सहयोग अपने बड़े भाई स्वर्गीय श्री जगदीश त्यागी की स्मृति में समिति के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उनके 81वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अर्पित किया है। जिससे अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक नमः करते हुए समाज को वैदिक ज्ञान से सम्पन्न करने में अपनी सात्त्विक आहुति को प्रदान किया है। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में आने के पश्चात् निरन्तर उनके प्रवचनों व क्रियाकलाप से प्रभावित होता चला गया और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने जीवन को याज्ञिक बनाने में संलग्न हो गया। समय-समय पर इस परिवार ने तन-मन-धन से किसी न किसी रूप में अपना सहयोग गाँधी धाम समिति व वैदिक अनुसन्धान समिति के कार्यों में निरन्तर प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, समृद्धि व शान्ति के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

दान-सूची

वैदिक अनुसन्धान समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए निम्न याज्ञिक एवम् श्रद्धालु महानुभावों ने अपना सात्त्विक सहयोग प्रदान किया है :

1. श्री शानी त्यागी, हापुड़	500 रुपये
2. श्री लक्ष्मी चन्द्र वैदिक, रूड़की	30,000 रुपये
3. श्री ज्ञानेश द्विवेदी	3,000 रुपये
(कृपया अपना पता व दूरभाष नं. सूचित करे।)	
4. श्री संजीव त्यागी, फरीदाबाद	5,100 रुपये
(अपने पुत्र जन्मदिवस के अवसर पर)	
5. श्रीमति ऊषा धर्मपत्नी श्री सुनील दत्त शर्मा, मेरठ	31,000 रुपये
6. श्री राकेश शर्मा, पानीपत (मासिक सहयोग)	3,000 रुपये
7. श्री एस.सी. भारद्वाज	10,000 रुपये

विशेष सूचना

वैदिक अनुसन्धान समिति के सभी आजीवन सदस्यों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि समिति की **साधारण सभा की आगामी बैठक दिनाँक 2-9-2018** दिन रविवार को, **ए-84 मालवीय नगर, दिल्ली-110017** में प्रातः 11.00 बजे प्रारम्भ होगी। जिसमें समय पर भाग लेने का कष्ट करें। सभा में निम्न विषयों पर विचार-विमर्श होगा–

1. पिछली आम सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
2. पिछले वर्ष के आय-व्यय की समीक्षा और नए वर्ष के अनुमानित आय-व्यय पर विचार।
3. प्रकाशन सम्बन्धी सभी विषयों पर विचार-विमर्श।
4. समिति के संविधान व कार्य प्रणाली में आवश्यक संशोधन पर विचार-विमर्श।
5. अन्य प्रश्न प्रधान जी की अनुमति से।

मन्त्री वैदिक अनसुन्धान समिति

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	100.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
*9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	45.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
*42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
*70.	ईश्वर मिलन	50.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00
*73.	नैतिक शिक्षा	50.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	100.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
14. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
15. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
16. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज नास्तिक तो यह कह रहा है कि जिसे, महादेव पुकारा जा रहा है। वह क्या पदार्थ है। वह इस आत्मा से जाना जाएगा। वह महादेव ऐसा पदार्थ नहीं जिसको हम तुमको स्पष्ट निर्णय करा दें। परन्तु समक्ष देखना है तो पूर्व तू अपने को जान और अपने को देख कि मैं कौन हूँ और कैसा हूँ। मैं आज जब अपने नेत्रों को नहीं देख सकता, तो उसको कैसे देख सकता हूँ। बिना विज्ञान के, बिना प्रकाश के जब मेरे में इतना प्रकाश नहीं कि मैं अपने नेत्रों को ही देख सकूँ, और आज हम उस महादेव को देखना चाहते हैं। वह महादेव तो उस महान अनुपम की कृपा से देखा जाएगा, जब तुम्हारा आत्मिक बल चढ़ जाएगा। मानवता विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएगी। तो हम आध्यात्मिक विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएँगे।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 46 : अंक : 551
अगस्त 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-08-2018
Published on 5th day of the same month